कर्मयोगी : लेखिका जय वर्मा-एक समीक्षा

समीक्षालेखक
डॉ. ऋतु माथुर
S-3,2nd Floor, Narendra apartment
12-Balrampur House, Allahabad
(Prayagraj) Pin code:-211002
Email:-anujritu01@gmail.com

सारांश :— अपने शीर्षक को पूर्णत: चरितार्थ करती (कर्मयोगी: लेखिका जय वर्मा) कर्मयोगीनी लेखिका आदरणीय जय वर्मा जी वास्तव में कर्मशीलता की प्रतिमूर्ति हैं। आदरणीय श्री बी. एल. गौड़ जी के संपादन में कर्मयोगी: लेखिका जय वर्मा, (पुस्तिका) जिनके संदर्भ में विभिन्न राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त साहित्यकारों, मनीषियों ने स्वमंतव्य व्यक्त किए हैं, जिसे पढ़ने पर सहज रूप से ही यह स्पष्ट हो जाता है, कि आदरणीया जय वर्मा जी मात्र कोई कवयित्री और लेखिका ही नहीं है, अपितु उनके कर्म संसार की अविरल यात्रा में उनकी कर्मठता, लगन, व्यवहार कुशलता, दांपत्य जीवन की अनंतता, धैर्य, मिलनसार व्यक्तित्व, राष्ट्रवाद, अपने गांव के प्रति अपार प्रेम, विद्वतापूर्ण लिए गए निर्णय ,सामाजिक योगदान और सबसे प्रमुख भारतीयता का चरम आकुल्य उनके सहयात्री रहे है। संस्कार संपन्न, ध्येय, धैर्य और धर्म से युक्त जय जी राष्ट्रप्रेम की ऊर्जा से संपृक्त हैं।

बीज शब्द : *कर्मयोगी, निर्लिप्त, अनंतता, अंतर्द्वंद, बहुआयामी*

कुर्वन्नेह कर्माणि जिजीविषेच्छतंसमा।
एवंत्वयिनान्यथेतोऽसितन कर्म लिप्यतेनरे।।

ईशावास्योपनिषदवर्णित उपरोक्तमंत्र मनुष्य को मार्गदर्शन प्रदान करता है, जिसके अनुसार इस विश्व में कर्म करते हुए ही मानव को सौ वर्ष जीने की इच्छा करनी चाहिए, इस प्रकार कर्म करते हुए ही जीने की इच्छा करने वाले मनुष्य को कर्म का कोई बंधन नहीं होता।

निर्लिप्त और निष्काम कर्मधारिणी, साहित्यिक व सांस्कृतिक,हिंदीभाषा एवं साहित्य की अदम्य संवेदनशील स्वनामधन्यरचनाकार श्रीमती जय वर्माविदेशी धरती पर प्रतिष्ठित व विख्यातसाहित्यकारों में से हैं,जो भारतीय संस्कृति,सभ्यता, भाषा को उत्तरोत्तरसमृद्ध और उर्वरित कर रहे हैं।

यूं तो आपदा के अवसर स्वरूपहोने वाली विभिन्न ऑनलाइन कार्यक्रमों मेंमुझे जय जी को सुनने का अनेक सुअवसर प्राप्त हुआ, किंतु उनके व्यक्तित्व के विभिन्न पहलुओं सेअवगत कराने काश्रेय 'कर्मयोगी: लेखिका जय वर्मा' पुस्तककोहै, जो उनके व्यक्तित्व और कृतित्व के मणिकांचन योग को सूक्ष्मता से उकेरती है।

अपने शीर्षक को पूर्णत: चरितार्थ करती (कर्मयोगी:लेखिका जय वर्मा) कर्मयोगीनीलेखिका आदरणीय जय वर्मा जी वास्तव में कर्मशीलता की प्रतिमूर्ति हैं। आदरणीय श्री बी. एल. गौड़ जी के संपादन में कर्मयोगी: लेखिका जय वर्मा, (पुस्तिका)जिनके संदर्भ में विभिन्न राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त साहित्यकारों, मनीषियों ने स्वमंतव्य व्यक्त किए हैं, जिसे पढ़ने पर सहज रूप से ही यह स्पष्ट हो जाता है, कि आदरणीया जय वर्मा जी मात्र कोई कवयित्री और लेखिका ही नहीं है, अपितु उनके कर्म संसार की अविरल यात्रा में उनकी कर्मठता, लगन, व्यवहार कुशलता,दांपत्य जीवन की अनंतता ,धैर्य ,मिलनसार व्यक्तित्व, राष्ट्रवाद ,अपने गांव के प्रति अपार प्रेम, विद्वतापूर्ण लिए गए निर्णय ,सामाजिक योगदान और सबसे प्रमुख भारतीयता का चरम आकुल्य उनके सहयात्री रहे है।संस्कार संपन्न, ध्येय,धैर्य और धर्म सेयुक्त जयजीराष्ट्रप्रेम कीऊर्जासे संपृक्तहैं।

अपने संपादकीय में ही श्री बी एल गौड़ जी ने श्रीमती जय जी के बहुआयामी व्यक्तित्व की चर्चा की है।साथ ही उनकी विभिन्न कविताओं का व कहानियों का भी विवरणप्रस्तुतकियाहै, जो उनके लेखन शैलीकी गंभीरता,यथार्थव त्रासदीकासन्निवेश, प्रवासी मन का अंतर्द्वंदऔर भारतीयता की अकुलाहट को दर्शाताहैं।उनकी कहानियों में नारी चरित्र,स्त्री मनोविज्ञान कीगहन अभिव्यक्ति है,जो स्त्री विमर्श के बहुआयामी पड़ताल की संभावनाओं को भी दर्शाती है।अनिश्चितता कोव्यंजित करती उनकी कविता "**एक पल के लिए जी लेने दो, एक पल ही तो बस अपना है,इस पल को मुझे छू लेने दो**"सहज ही जीवन के अनुभवों औरअतीत के संदर्भों कोपिरोती हुई वर्तमान को जीने का सबक देती है। जय जीके सराहनीय साहित्यिक कदम, सामाजिक व ढंढं परियोजनाएं उनकी सक्रिय भूमिका का सकारात्मक प्रतिफल ही उनके द्वारा स्थापित की गई संस्थाओं को प्राप्त विभिन्न सम्मानों के माध्यम से महिमामंडित हुआहै,जो उनकी हिंदी व सामाजिक कार्योंके प्रति निस्वार्थ सेवा का ही वास्तविक परिणाम है।

इस पुस्तक में अपने लेख के माध्यम सेविभिन्नमनीषियोंने जय जी की जीवन संबंधीचुनौतियों,परिस्थितियों की भयावहता,उनका धैर्य, दृढ़तापूर्वक सामनाकरने का साहस,साथही प्रतिस्पर्धा के दायरे से उठकर व्यापक स्तर पर आच्छादित उनके विचारों के गाम्भीर्यका उद्धरणयुक्तप्रस्तुतिकरण किया है। जीवन के अनेक पड़ावों कोसफलतापूर्वक पार करते हुए,वे अपने दृढ़ निश्चयव सकारात्मक सोच के संबलसे वे अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर है।वेदयज्ञमयजीवन आदर्शों से युक्त,संगठन भाव व परदु:ख पीड़ा को अवशोषित करने के भाव से पूर्णत:सिक्त है, जिसकी सुवास चतुर्दिक व्याप्त है।

साहित्य सेवा में पूर्णतः समर्पित इंग्लैंड के साहित्यिक शहर नॉटिंघम में निवास करने वाली जय वर्मा जी कारचनासंसारकेवल उन तकहीसीमित नहीं, वरनवेसदैव अन्य कवियों को भी लिखने के लिए प्रेरित करती रहती हैं,इस संदर्भ में वे अपने शहर आने वाले प्रत्येक साहित्यकारोंके सत्कार मेंकोई कमी नहीं करती। उनका आतिथ्य प्रत्येक वर्ग, संस्था और संगठनों से संदर्भितमनुष्योंके परमार्थ सेहै। हिंदीभाषी कार्यक्रमोंके अतिरिक्तबहुभाषीकार्यक्रमों के आयोजन का भी वे सफल प्रयास करती रही हैं, जिसके माध्यम से भारतीय संस्कृति एक ही मंच परऐक्य रूप धारण करसाहित्यिक प्रतिभा व संस्कृति का संवर्धन कर सकें,जिसे उन्होंने काव्य रंग बहुभाषी संस्था की स्थापना द्वारा चरितार्थ किया।हिंदी साहित्य और भाषाकी कर्मठ योगिनी,जया जी अनेक राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय साहित्यिक चैरिटी संस्थाओं के साथ सक्रिय रूप से जुड़ी हुई है, साथ ही अनेक देशों में आयोजित विश्व हिंदी सम्मेलन मेंउन्होंने सक्रिय भागीदारी की। लंदन पहुंचने के प्रारंभिक वर्षों में उन्होंने अत्यंत सहजता पूर्वक कला निकेतन स्कूल में पाठ्य पुस्तक व पाठ्यक्रम के अभाव में भी स्वयं अंग्रेजी में उपलब्ध बाल कहानियों को हिंदी में रूपांतरित कर, बच्चों को हिंदी की शिक्षा प्रदान की साथ ही पाठ्य पुस्तकें कोस्वयं से चित्र बनाने काभी सार्थक प्रयास किया जिससे बच्चों को शिक्षा के प्रति सहज रुचि उत्पन्न हो सके।दिन में बाल कहानियों का अंग्रेजी पुस्तकों का हिंदी अनुवाद हिंदी के प्रचार प्रचार में इनका योगदान अभूतपूर्व है। जय जी एक अच्छी शिक्षक साहित्यकार, लेखक व कवयित्री तो है ही,पर वे मात्र साहित्य संरचना में हीसंलिप्त नहीं है, विभिन्न प्रकार केखेलकूद में भी वे अपनी रुचि रखतीहैं। उनमेंएक अच्छी चित्रकारहोने का गुणभी हैं,योग अध्ययन वअध्यापनभी उनके जीवन का महत्वपूर्ण पक्ष रहे हैं,उनकेजैसा बहुआयामी व्यक्तित्व वास्तव में दुर्लभ है।

विभिन्न पुरस्कारों पदोंऔर सम्मानों से अलंकृत जय वर्मा जी की कृतियों में परिस्थितियों की गंभीरता तो है ही व्यक्ति और समष्टि के लिए चिंतन और संदेश भी है। जिसमें सामाजिक असंवेदनशीलताका फैलाव, मानव का मानव से दुराव, त्रासदी और पीड़ा की एकरूपता उसे महसूसनेकी शक्ति सकारात्मक सोच के साथ आशान्वित है।शब्दों की सात्विकता व सरलता उनकी संवेदना को वैश्विक आयाम प्रदान करती है, जिससे उन्होंने जीवन और जगत के विभिन्न प्रेरकप्रतीकों औरउपादानों के माध्यम से सर्व सुलभ किया है, रचना की उनकीयह अभिव्यंजना बेजोड़ है, यही वह शिल्प है जो उनकी कृतियों को विविधताकेबहुआयामीरंगों मेंआकार देती है। संप्रेषण का यह प्रभुत्व अत्यंत उनकी रचनाओं में समाहित है।उनकी रचनाओंमें संबंधों की गहराई, शुद्ध प्रेमात्माकी सिद्धावस्थाहै, प्रेम का समर्पण है।एक ओर ईश्वरीय भक्ति की शक्ति है,तो वहींअनुभूति की गहनता, आशा और आस्था का भी है। भारतीय संस्कृति की यथार्थवादी, कर्म प्रधान,मानवतावादी दृष्टि का विहंगम दृश्यभी व्याप्त है, जो उनकी आधारभूत रचनाधर्मिता को प्रमाणित करता है।

यह पुस्तक माध्यम है, जया जी का जयगान प्रत्येक उस व्यक्ति तक पहुंचाने की, जो भारतीय हैं और जो कर्मठ है, अपने कार्यों को सद्गति प्रदान करना चाहतें है ,प्रत्येक प्रकार की कठिनाइयों से जूझ कर अपने मंतव्य को गंतव्य तक पहुंचाने का माद्दा रखते है;यह प्रेरणाप्रद पुस्तक जागरूक करती है और जया जी के जीवन संबंधी परतों को परत-दर- परत खोलकर हमारे समक्ष जीवन की उन चुनौतियों को प्रस्तुत करती है,कि किस प्रकार उन्होंने आजीवन वर्तमान को जीते हुए जीवन और लेखन के विभिन्न पहलुओं को आत्मसात कर विभिन्न माध्यमों से उसे उकेरना है, जिसमें मानवीय मन की परिस्थितियों संवेदनाओं, पारिवारिक सहयोग,परिवेश का प्रभाव, संस्कारों की अक्षुण्णता, वैश्विक स्तर पर मानवीय सरोकारों की प्रचंड उद्वेलना सन्निहित है, जिससे उनका जीवन ही चुनौतियों व सकारात्मक जीवन का पर्याय बन गया है-

"राही है तू कर्म का, अपनी मंजिल तलाश कर, तर्क में क्या रखा है अपना कर्म प्रधान कर।"

प्रत्येक कठिनतर परिस्थितियों से उबरकर किस प्रकार मानव को उदारतापूर्वक संगठित होकर सद्भाव व संवेदनाओं का आश्रय लेकर जीवन यात्रा को सचेतन तथा सफल बनाना है, जीवन के प्रत्येक निर्णय व सदाशयता से पूर्ण लक्ष्यों की प्राप्ति दृढ़ निश्चय , गांभीर्य व्यक्तित्व, सत्यनिष्ठा व सिद्धांतों के उचित कार्यान्वयन से ही संभव है,जो मानव के उत्कर्ष का द्योतक है, जैसे अगणित जीवनोपयोगी मूल्यों के बहुमूल्य सूत्रों से संकलित यह पुस्तिका वास्तव में आदरणीया के व्यक्तित्व और कृतित्व की मणिकांचन प्रस्तुति है, जो उनके बहुआयामी जीवन की विविधताओं को विभिन्न विद्वत विभूतियों के माध्यम से प्रस्तुत करती है, जो आदरणीया जया जी की बहुमुखी प्रतिभा को दिग-दिगंत तक विकीर्ण करने में महती भूमिका सिद्ध करेगी।

शुभेच्छा।

----------00--------

<u>संदर्भ सूची</u>

1. कर्म योगी: लेखिका जय वर्मा, संपादन बी.एल गौड़,प्रकाशन सिलेक्टिव एंड साइंटिफिक बुक्स, आकाश विहार, नांगलोई, नजफगढ़ रोड नई दिल्ली-110043

----------00--------